हुकूमत कैसे करें

अमीर–उल–मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस–सलाम
का मिस्र के गवर्नर
जनाब मालिक अश्तर के नाम ख़त

हुकूमत कैसे करें?

अमीर–उल–मोमेनीन हज़रत अली
अलैहिस–सलाम का मिस्र के गवर्नर
जनाब मालिक–ए–अश्तर के नाम ख़त

अनुवाद
सै0 मो0 मैहदी बाक़री

प्रकाशक
इदारा ए इस्लाह
इस्लाह, मस्जिद दीवान नासिर अली
मुर्तज़ा हुसैन रोड, यहियागंज, लखनऊ–226003
फोन व फैक्सः 91 522 4077872
ई–मेलः islah_lucknow@yahoo.co.in, **www.islah.in**

नाम पुस्तक	:	हुकूमत कैसे करें?
अनुवाद प्रस्तावना	:	मौलाना तसदीक़ हुसैन रिज़वी
अनुवाद उपदेशपत्र	:	सै0 मो0 मैहदी बाक़री
प्रकाशन वर्ष	:	अप्रैल 2018
पेज	:	64
मुद्रण	:	इम्प्रेशन ऑफसेट प्रेस, लखनऊ
मूल्य	:	**Rs. 25.00**
प्रकाशक	:	इदारा ए इस्लाह

ISBN : 978-93-87479-07- 4

विषय–सूची

1	प्रस्तावना	4
2	हज़रत अली[अ0] का ख़त	18
3	जनता की भलाई	25
4	सलाहकार	27
5	मंत्रालय	28
6	समाज में व्यक्तियों कि पहचान	29
6:1	फौजी दस्ते	32
6:2	अधिकारीयों का चयन	33
6:3	व्यापारी और उद्योगपति	33
6:4	गरीब और गरीबों की निम्न श्रेणी	34
6:5	जनसम्पर्क	35
6:6	व्यक्ति की पहचान	36
7	अदालत	38
8	कार्यकारी अधिकारी	40
9	राजस्व का प्रशासन	42
10	क्लर्क के प्रशासनिक कार्य	44
11	व्यापारी और उद्योगपति	46
12	पिछड़ा वर्ग	48
13	अनाथ और वृद्धों की ज़िम्मेदारी	50
14	जनता दरबार	51
15	शासक के कार्य	52
16	विशेष और राज़ रखने वाले लोग	55
17	जनता के बीच छवि	56
18	दुश्मन से समझौता	57
19	शासक के कर्तव्य	61
20	भविष्य से सीख	63

प्रस्तावना

आज पूरी दुनिया 99 प्रतिशत से अधिक ज़्यादतियों और अन्याय का अड्डा बनी हुई है। सूरत–ए–हाल यह है कि दुनिया के हालात को देखते हुए कभी कभी ये डर सताने लगता है कि यह खूबसूरत संसार जिसे रचियता ने अपने प्राणियों के लिये सजाया है कहीं प्रलय से पहले ही प्रलय का शिकार न हो जाए। इस के ज़िम्मेदार जनता से ज़्यादा हुकूमत करने वाले सत्तासीन लोग होंगे।

लेकिन पिछले हुक्मरानों में एक ऐसा भी गुज़रा है जिसने (36 हिजरी से 40 हिजरी) पूरे पाँच साल भी राज्य नहीं किया लेकिन जिस दिन सत्ता

की बागडोर उसने सँभाली थी उस दिन से लेकर अपनी आख़री साँस तक वह न्याय करता रहा और उसका वध ही इसी लिये हुआ कि उसने अपनी जानकारी में कभी भी और कहीं भी अन्याय नहीं होने दिया। वह न्याय के प्रतीक थे, हज़रत अली अलैहिस–सलाम।

यूँ तो वह मुसलमानों के ख़लीफ़ा कहलाते थे लेकिन उन्होंने कभी किसी ग़ैर मुस्लिम **(Non Muslim)** के साथ भी अन्याय नहीं किया और यही वजह थी कि उनकी शहादत के बाद कूफ़े की ग़रीब यहूदी और ईसाई औरतें भी बिलख बिलख कर रो रही थीं। जब लोगों ने उनसे पूछा कि तुम क्यों रो रही हो? **तो उन्होंने कहा कि यह वह दयालु व्यक्ति था जो रात के अँधेरों में हमारे घरों में खाने पीने का सामान पहुँचाया करता था।**

आपका ही उपदेश है कि **"जीवन यूँ व्यतीत करो कि अगर जीवित रहो तो लोग तुमसे मिलने को उत्सुक रहें और तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें याद करके रोयें।"**

ज़ातपात, सम्प्रदाय व धर्म के नाम पर जो लोग जनता में फूट डालने का काम करते हैं उन्हें इस न्याय के प्रतीक के विचारों को सुनना और पढ़ना चाहिये।

अपने एक वक्तव्य में हज़रत अली[अ0स0] कहते हैं कि: **मैं अल्लाह को साक्षी बनाकर कहता हूँ कि मेरा कँटीली झाड़ियों पर जागकर रात गुज़ार लेना या जंजीरों में जकड़ा हुआ खींचा जाना मुझे स्वीकार है लेकिन यह स्वीकार नहीं कि मैं प्रलय के बाद अल्लाह के सामने इस तरह जाऊँ कि यहाँ किसी के साथ अन्याय किया हो या किसी का थोड़ा माल भी हड़प**

लिया हो। भला मैं किसी दूसरे पर किस तरह अत्याचार करूँ कि मैं स्वंय ही बहुत जल्दी यहाँ से चला जाने वाला और ज़मीन पर बहुत दिनों तक रहने वाला नहीं हूँ। सौगंध है खुदा की, मैंने (अपने बड़े भाई) अक़ील को खुद देखा है कि उन्होंने अपनी ग़रीबी के कारण स्टेट के ख़ज़ाने से (जो उन्हें मिलता था उससे अधिक) तीन किलो गेहूँ की माँग की थी जबकि उनके बच्चों का ग़रीबी के कारण बुरा हाल था कि उनके चेहरों से उनकी ग़रीबी झलकती थी। बार–बार उन्होंने मुझसे गुहार लगाई और अपनी माँग को दोहराया तो मैंने उनकी बात सुनी। वह यह समझे कि मैं उनकी माँग पूरी कर दूँगा लेकिन मैंने उनके लिये लोहे का एक टुकड़ा गर्म किया और फिर उसे उनके शरीर के निकट ले गया ताकि वह कुछ समझें, उन्होंने इस तरह विलाप किया कि जैसे कोई बीमार अपने दर्द से बेचैन होकर कराह रहा हो और

हो सकता था कि वह जल जायें तो मैंने कहा कि ऐ **अक़ील! आप इस लोहे के कारण विलाप कर रहे हैं जिसे एक मनुष्य ने केवल मज़ाक़ में तपाया है और मुझे उस आग की तरफ़ खींच रहे हैं जिसे अल्लाह ने अपने क्रोध के कारण (पापियों के लिए) भड़काया है। आप आग के कश्ट से विलाप करें और मैं नरक जाने से न डरूँ।**

नोटः उपरोक्त लेख को पढ़कर यह प्रश्न हो सकता है कि जब स्वंय हज़रत अली[अ0] अपने बड़े भाई और उनके बच्चों की दुर्दशा देख रहे थे तो फिर सहायता क्यों नहीं की। बात यह है कि उनके भाई स्टेट के ख़ज़ाने से मदद की माँग कर रहे थे और हज़रत अली[अलै0] का कहना यह था कि इसमें जनता के हर ग़रीब का बराबर का हक़ है और जो हक़ ग़रीबी की वजह से भाई का था वह उनको

मिल रहा था। हज़रत अली[अ0] ने स्टेट के ख़ज़ाने से मना किया लेकिन आपने अपने हिस्से से उनकी सहायता की। आपका यह चरित्र हर सत्ता में रहने वाले के लिए मार्ग दर्शक के रूप में देखा जा सकता है।

स्वंय आपका हाल यह था कि अपनी राजधानी ''कूफ़ा'' में आप बहुत निम्न स्तर के कपड़े पहने थे जब पूछा गया तो आपने जवाब दिया कि यह वही कपड़े हैं जो मैं मदीने से लेकर चला था मैंने स्टेट के ख़ज़ाने में कोई हेरा फेरी नहीं की है। यह वाक्य उन लोगों को एक पाठ सिखाता है जो सरकारी ख़ज़ानों को लूटकर या बैंकों को लोन के नाम से लूटकर विदेश चले जाते हैं या विदेशी बैंकों में अपना खाता खोल देते हैं।''

इसी वक्तव्य में आप कहते हैं कि इससे ज़्यादा आश्चर्य जनक बात यह है कि एक रात अशअस बिन क़ैस नाम का आदमी मेरे पास शहद में

गूँधा हुआ हलवा बर्तन में रखकर लाया जो मुझे इतना बुरा लगता था जैसे साँप के थूक या उलटी से गूँधा गया हो। मैंने पूछा यह कोई इनाम है या ज़कात या सदक़ा? जो हम रसूल[सल0] के घर वालों पर हराम है? उसने कहा यह कुछ नहीं है यह केवल एक उपहार है। (आमतौर पर रिशवत को उपहार या गिफ़्ट का नाम दे दिया जाता है)।

मैंने कहा कि तुझे मौत आए तू ख़ुदा के दीन के रास्ते से आकर मुझे धोखा देना चाहता है। तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है या तू पागल हो गया है या आव बाव बक रहा है, आख़िर है क्या? **अल्लाह साक्षी है कि अगर मुझे सारे संसार की हुकूमत, आसमान के नीचे मौजूद तमाम दौलतों के साथ दे दी जाए और मुझसे यह माँग की जाए कि मैं किसी चींटी पर सिर्फ़ इतना अत्याचार करूँ कि उसके मुँह से उस गेहूँ के छिलके को**

छीन लूँ जो वह चबा रही है, तो हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकता हूँ यह तुम्हारी दुनिया मेरी नज़र में उस पत्ती से ज़्यादा बेक़ीमत है जो किसी टिड्डी के मुँह में हो और वह उसे चबा रही हो।

भला अली[अ0] को उन नेअमतों (खुशी देने वाली चीज़ो) से क्या मतलब जो ख़त्म हो जाने वाली हैं और उस अपमान से क्या रिश्ता जो बाक़ी रहने वाली नहीं है। मैं खुदा की शरण चाहता हूँ बुद्धि का इस्तेमाल न करने और धर्म के मार्ग से विचलित होने से और उसी से सहायता का इच्छुक हूँ।

(नजहुलबलाग़ा, वक्तव्य नं0 224)

हज़रत अली[अ0] ने अपने न्याय, अपनी हुकूमत के संचालन, अपने पत्रों, अपने वक्तव्यों, अपने उपदेशों से दुनिया को बता दिया और ख़ासतौर पर सत्ताधारियों को झिंझोड़ा कि

अगर तुमने अपनी सोच, दुश्मनी, सम्प्रदायिकता और निजी स्वार्थ व निजी लाभ के आधार पर न्याय से आँख मूँद ली तो तुम मानवता के वह मुजरिम माने जाओगे जिसे न इतिहास क्षमा करेगा और न इस संसार का रचियता माफ़ करेगा और फिर एक दिन जब तुम्हारे अत्याचारी करतूतों का वबाल तुम्हारे सर आ पड़ेगा, इतिहास जिसका साक्षी रहा है तो कोई तुम्हारी फ़रियाद को सुनने वाला भी नहीं मिलेगा।

''शाम'' के हाकिम के दरबार में जब मनोरंजन के तौर पर हज़रत अली[अ0] के बारे में कवितायें सुनाई जा रही थीं तो 'अम्रे आस' नामक व्यक्ति की यह पंक्ति सब पर भारी रही थी कि ''श्रेष्ठता तो बस वही है जिसकी गवाही दुश्मन दें।''

नॉन मुस्लिम लोगों ने भी जब हज़रत अली[अ0] की जीवनी का अधय्यन किया तो ''लेबनान'' के प्रसिद्ध ईसाई

लेखक 'जार्ज जुरदाक़' ने अरबी भाषा में पाँच भागों में किताब लिखी जिसका नाम था ''सौतुल अदा–लतिल इंसानिया''। यानी 'मानवता के न्याय की आवाज़'। उर्दू में इसका अनुवाद स्वर्गीय मौलाना सैय्यद मुहम्मद बाक़िर नक़वी ने किया था 'इदारए इस्लाह' से जिसके कई एडीशन प्रकाशित हो चुके हैं।

'जार्ज जुरदाक़' का यह वाक्य सुनहरे अक्षरों से लिखा जाने वाला है कि **''अली अपने अति न्याय के कारण 'कूफ़ा' की मस्जिद की मेहराब में शहीद कर दिये गये।''**

इस सच्चाई की रौशनी में खुद हज़रत अली[अ0] का तलवार लगने के बाद यह कहना कि **''काबे के पालनहार की क़सम मैं कामयाब हो गया।''** अपने अन्दर बहुत सारा अर्थ समेटे हुए है।

आज इलैक्शन में विजयी होने वाले सत्ता के नशे में चूर होकर हार जाने वालों की खिल्ली उड़ाते

हैं या ज़्यादा जोश में आकर हमला करके उन्हें मौत की गोद में सुला देते है। हज़रत अली का यह कथन बता रहा है कि हार और जीत विजयी होने की कसौटी नहीं है सच्ची कामियाबी और विजय तो यह है कि जब सत्ता मिल जाए तो मरते मरते भी न्याय का दामन हाथ से छूटने न पाए। यही है असली कामयाबी और इसी की वजह से हज़रत अली ने अपनी कामयाबी का एलान किया कि मैं शहीद तो हो रहा हूँ, लेकिन मैंने अपने पूरे शासन काल में कोई एक काम भी न्याय के विपरीत नहीं किया।

अपने शासन काल में हज़रत अली[अ0] ने एक बहुत बड़ी भीड़ के समक्ष यह सवाल किया था कि क्या तुममें से कोई ऐसा है? जो मेरे शासन काल में भूखा या वस्त्र हीन रहा हो? तो कोई एक आवाज़ भी न उठी।

किसी ने अपने एक ईसाई दास को बूढ़ा हो जाने की वजह से आज़ाद कर दिया और उसे खाना

तक नहीं दिया तो आप उस दास की हालत को देखकर तड़प गये और क्रोधित होकर कहा कि **जब तक यह काम करने की क्षमता रखता था, इसे तुमने रखा और जब यह बूढ़ा और कमज़ोर हो गया तो इसे भीख माँगने के लिए छोड़ दिया। मैं इसे पसन्द नहीं कर सकता।** आज से इसका खाना ख़र्चा स्टेट (सरकारी ख़ज़ाने) के ज़िम्मे है।

यह है सच्चा न्याय कि अपने सगे भाई के साथ भी कोई रिआयत नहीं बरती और सत्ता धारियों को यह समझाया कि **सरकारी ख़ज़ाना रिश्तेदारों और सम्बन्धियों व अपने निजी कामों पर लुटा देना यह ईमानदारी नहीं है, बल्कि खुली हुई बेईमानी है।** दूसरी ओर यह भी बता दिया कि **व्यक्ति किसी भी ज़ात या धर्म का हो उसे वंचित नहीं किया जाएगा। सरकारी मामलों में किसी भी तरह के भेद भाव से काम नहीं लिया**

जाएगा। जिसका जो हक़ है उसे मिलेगा। दुनिया के सत्ताधारियों को इसपर अवश्य विचार करना चाहिये।

हज़रत अली[अ0] और उनके बाद आने वाले उनके पुत्रों और पौत्रों को हुकूमत से वंचित रखा गया। केवल एक हज़रत अली ही हैं जिनको थोड़ा समय मिल गया और आपने उस थोड़े से समय में बता दिया कि ''अली से सीख पैहम सीख आईने जहाँ बानी''। अर्थात् **''दुनिया में हुकूमत का संविधान क्या होना चाहिये, यह अली से सीखो।**''

13 रजब हज़रत अली[अ0] के जन्म की तारीख़ है। शान से उत्सव मनाईये। खुशियाँ बिखेरिये। महफ़िलों और कवि सम्मेलनों का आयोजन कीजिये, लेकिन कुछ मुनासिब रक़म इस बात पर ज़रूर ख़र्च कीजिये कि उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी और देश में प्रचलित दूसरी भाषाओं में हज़रत अली के न्यायपूर्ण उपदेशों को प्रकाशित करके पब्लिक और सरकारी अधिकारियों

व मंत्रियों तक ज़रूर पहुँचाईये। **इस आशा के साथ कि दुनिया के आकाश से अत्याचार के बादल छट जायें और भाांति का सूरज निकल आए। उग्रवाद व आतंकवाद का विनाश हो और आतंकवाद को हवा देने वालों का नाम व निशान मिट जाये।**

मिस्र के गवर्नर हज़रत 'मालिक अश्तर' के नाम हज़रत अली[अ0] का यह पत्र आप के जन्म दिवस के स्वागत में 'इदारए इस्लाह, लखनऊ' के माध्यम से इस दुआ के साथ प्रकाशित किया जा रहा है कि, हे पालनहार तू मोहम्मद[सल0] व उनकी औलाद के सदक़े में 'इदारे' को आगे भी इसी तरह के प्रकाशन की क्षमता प्रदान करता रहे।

सैय्यद मोहम्मद जाबिर जौरासी
प्रबन्धक, इदारए इस्लाह, लखनऊ
9 मार्च 2018, जुमा
20 जमादिउल आख़िर 1439 हि0
1379 शहादते हुसैनी

*अमीर उल मोमेनीन **हज़रत अली*** अलैहिससलाम

का ***ख़त***

हज़रत अली[अ0] ने मालिक बिन हारिस अश्तर नख़ई के नाम ये ख़त 38 हिजरी मे लिखा था, उस वक्त मोहम्मद बिन अबीबक्र मिस्र के गवर्नर थे, मुआविया इब्ने अबू सूफयान ने मिस्र पर क़ब्ज़ा करने के लिए छः हज़ार फौज अम्र बिन आस के नेतृत्व में भेजी थी जिससे वहॉ के हालात खराब हो गये ये मालूम होते ही हज़रत अली[अ0] ने वहॉ अशांति ख़त्म करने और अच्छी हुकूमत चलाने के लिए कुछ सिद्धांत लिख कर अपने बहुत क़रीबी मालिके अश्तर को देकर उनको मिस्र और उसके आस–पास के क्षेत्र का गवर्नर बनाकर भेजा, जब यह सूचना मुअविया को हुई तो उसने मालिके अश्तर को मिस्र पहुचने से रोकने के लिए पड़यंत्र करके रास्ते में ही अरीश या कुलजुम के स्थान पर

ज़हर से शहीद करवा दिया। ये ख़त हज़रत के तमाम सरकारी ख़तों में सबसे ज़्यादा डिटेल में है और बहुत ही उपयोगी भी है इस ख़त को संयुक्त राष्ट्र ने अपने चार्टर में शामिल किया है।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपालु और अत्यन्त दयावान हैं।

अनुवाद :

ये वो आदेश है जो अल्लाह के बंदे अमीर–उल–मोमेनीन हज़रत अली[अ0] ने मालिक बिन हारिसे अश्तर नख़ई के नाम लिखा है जब उन्हें श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने, दुश्मन से जिहाद करने हालात सुधारने और शहरों के पुनर्वास के लिए मिस्र का गवर्नर बनाकर रवाना किया।

गवर्नर की योग्यता और ज़िम्मेदारियाँ:

सबसे पहला काम ये है कि **अल्लाह से डरो उस की आज्ञापालन करो जिन कर्तव्यों और चरित्र का अपनी किताब में हुक्म दिया है** उनका अनुसरण करो कि कोई शख़्स इनके अनुसरण के बग़ैर नेक नहीं हो सकता है और कोई शख़्स इनके इनकार और बर्बादी के बग़ैर बुरा नहीं करार दिया जा सकता है अपने दिल हाथ और ज़बान से दीने ख़ुदा की मदद करते रहना कि अल्लाह ने ये ज़िम्मेदारी ली है कि अपने मददगारों की मदद करेगा और अपने दीन की हिमायत करने वालों को सम्मान और सौभाग्य देगा।

दूसरा हुक्म ये है कि **अपने मन के ख़्वाहिशात को कुचल दो और इस को बहकने से रोके रहो** कि दिल बुराईयों का हुक्म देने वाला है जब तक पालने वाले का रहम शामिल न हो जाएगा। इस के बाद मालिक ये याद रखना कि मैंने तुमको ऐसे क्षेत्र की तरफ भेजा है जहां न्याय और उत्पीड़न की विभिन्न हुकूमतें गुज़र चुकी

हैं और लोग तुम्हारे काम को इस नज़र से देख रहे हैं जिस नज़र से तुम उनके काम को देख रहे थे और तुम्हारे बारे में वही कहेंगे जो तुम दूसरों के बारे में कह रहे थे। **अच्छे चरित्र वाले लोगों की पहचान उस अच्छाई में होती है जो उनके लिए लोगों की ज़बानों पर जारी होती है** इसलिए तुम्हारा नेक काम पसन्द किया जाना चाहिए। ख़्वाहिशात को रोक कर रखो और जो चीज़ें हलाल न हो उस के बारे में मन को लगाने से बचो यही दूरी उस के हक में इन्साफ है चाहे उसे अच्छा लगे या बुरा।

जनता के साथ मेहरबानी और मोहब्बत व दया को अपने दिल का तरीक़ा बना लो और ख़बरदार उनके हक़ में फाड़ खाने वाले दरिन्दों के जैसे न हो जाना कि उन्हें खा जाने ही को ग़नीमत समझने लगो।

अल्लाह के बनाए प्राणियों की दो किस्में हैं कुछ तुम्हारे दीनी भाई हैं और कुछ दुनिया में तुम्हारे जैसे

इन्सान हैं जिनसे ग़लती भी हो जाती है और उन्हें ग़लती का सामना भी करना पड़ता है और जान–बूझ कर या धोके से उनसे भी ख़ताएँ हो जाती हैं। इसलिए **उन्हें वैसे ही माफ कर देना जिस तरह तुम चाहते हो** कि पालनहार तुम्हारी ग़लतियों को माफ करे तुम उनसे ऊपर हो और तुम्हारा हाकिम तुम से ऊपर है और अल्लाह तुम्हारे हाकिम से भी ऊपर है और **उसने तुमसे उनके मामलों को पूरा करने की मांग की है** और उसे तुम्हारे लिए इम्तेहान का माध्यम बना दिया है और ख़बरदार अपने दिल को अल्लाह के मुक़ाबले पर न उतार देना। कि तुम्हारे पास उस के अज़ाब से बचने की ताक़त नहीं है और तुम उस के आशीर्वाद और दया से दूर भी नहीं हो। और **ख़बरदार किसी को माफ कर देने पर अफसोस न करना और किसी को सज़ा दे कर अकड़ न जाना। गुस्सा व रोश के इज़हार में जल्दी न करना अगर उस के टाल देने की गुंजाइश पाई जाती हो और ख़बरदार ये न कहना**

कि मुझे शासक बनाया गया है इसलिए मेरी शान ये है कि मैं हुक्म दूं और मेरी आज्ञा मानी जाये कि इस तरह दिल में फ़साद दाख़िल हो जाएगा और दीन कमज़ोर पड़ जाएगा और इन्सान ज़माने के बदलाव से नज़दीक हो जाएगा। और अगर **कभी तख़्त व हुकुमत को देखकर तुम्हारे दिल में महानता व महिमा और घमंड पैदा होने लगे तो पालनहार के विशाल मुल्क पर ग़ौर करना और ये देखना कि वो तुम्हारे ऊपर तुमसे ज़्यादा अधिकार रखता है** कि इस तरह तुम्हारी सरकशी दब जाएगी। तुम्हारा विद्रोह रुक जाएगा और तुम्हारी गई हुई अक़्ल वापस आजाएगी।

देखो ख़बरदार अल्लाह से उस की महानता में मुकाबला और उस के पराक्रम से समानता की कोशिश न करना कि वो हर तानाशाह को ज़लील कर देता है और हर घमंड करने वाले को नीचा बना देता है। अपनी ज़ात अपने परिवार और आम

जनता में जिनसे तुम्हें सम्बन्ध है सब के बारे में अपने आप और अपने पालनहार से इन्साफ करना कि ऐसा न करोगे तो ज़ालिम हो जाओगे और **जो अल्लाह के बंदों पर जुल्म करेगा उस के दुश्मन बंदे नहीं ख़ुद अल्लाह होगा** और जिस का दुश्मन अल्लाह हो जाएगा उस की हर दलील बातिल हो जाएगी और वो अल्लाह से मुक़ाबिला करने वाला कहा जाएगा जब तक अपने जुल्म को छोड़े न या तौबा न करले। अल्लाह की नेअमतों की बर्बादी और इस के अज़ाब में जल्दी का कोई कारण जुल्म पर बाक़ी रहने से बड़ा नहीं है। इसलिए कि **वो मज़लूमीन की फ़र्याद का सुनने वाला है और ज़ालिमों के लिए मौके का इंतिजार कर रहा है।**

तुम्हारे लिए पसंद करने वाला काम वो होना चाहिए जो हक़ के हिसाब से बेहतरीन, इन्साफ के हिसाब से सबको शामिल और जनता की मर्ज़ी से बहुमत के लिए पसंदीदा हो, आम

लोगों की नाराज़गी ख़ास की रजामंदी को भी बे–असर बना देती है, और ख़ास लोगों की नाराज़गी आम लोगों की रज़ामंदी के साथ माफी के क़ाबिल हो जाती है। जनता में ख़ास से ज़्यादा शासक पर खुशहाली में बोझ बनने वाला और बलाओं में कम से कम मदद करने वाला। इन्साफ करना पसंद करने वाला और आग्रह के साथ मांग करने वाला कुछ मिलने के अवसर पर कम से कम शुक्रिया अदा करने वाला और न देने के अवसर पर मुश्किल से माफ करने वाला। समय के दुखों में कम से कम सब्र करने वाला, कोई नहीं होता है।

जनता की भलाई:

जनता की सामूहिक ताक़त दुश्मनों के मुकाबला में आम जनता ही मुक़ाबला करती हैं इसलिए तुम्हारा झुकाओ उन्हीं की तरफ होना चाहिए और तुम्हारी पसन्द उन्हीं की तरफ ज़रूरी है। **जनता में सबसे ज़्यादा दूर और तुम्हारे नज़दीक नफ़रत उस शख़्स से होना**

चाहिए जो ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की बुराईयों का तलाश करने वाला हो।

इसलिए कि लोगों में कुछ न कुछ कमज़ोरियाँ पाई जाती हैं और उनकी **पर्दापोशी की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी** शा**सक पर है** इसलिए ख़बरदार जो बुराई तुम्हारे सामने नहीं है उन का ख़ुलासा ना करना। **तुम्हारी ज़िम्मेदारी सिर्फ बुराईयों का सुधार कर देना है और जो दिखाई न दे उस का फैसला करने वाला अल्लाह है।** जहां तक सम्भव हो लोगों की इन तमाम कमियों की पर्दापोशी करते रहो जिन अपनी कमियों की पर्दापोशी की अल्लाह से तमन्ना करते हो। लोगों की तरफ से नफरत की हर गांठ को ख़ोल दो और दुश्मनी की हर रस्सी को काट दो और जो बात तुम्हारे लिए स्पष्ट न हो उससे अंजान बन जाओ और **हर चुग़ुलख़ोर (दूसरों की बुराई करने वाला) की पुष्टि में जल्दबाज़ी से काम न लो कि**

चुगुलख़ोर हमेशा विश्वासघाती होता है चाहे वो हमदर्द के ही भेस में क्यों न आए।

सलाहकारः

देखो अपनी सलाह में किसी कंजूस को शामिल न करना कि वो तुमको सदाचार और उदारता के रास्ता से हटादेगा और ग़रीबी रेखा का ख़ौफ दिलाता रहेगा और इसी तरह **बुज़दिल से सलाह न करना** कि वो हर कार्य में कमज़ोर बनादेगा। और **लालची से भी सलाह न** करना कि वो ज़ालिमाना तरीक़े से माल जमा करने को भी तुम्हारी निगाहों में आसान कर देगा। ये कंजूसी बुज़दिली और लालच जबकि अलग अलग जज़्बात व आदतें हैं लेकिन इन सब की वजह अल्लाह के बारे में बुरी सोच है जिसके बाद ये आदतें सामने आती हैं।

मंत्रालयः

और देखो तुम्हारे मंत्रालय में सबसे ज़्यादा बदतर वो है जो तुमसे पहले बुरे लोगों का वज़ीर रह चुका हो और उनके गुनाहों में शरीक रहा हो। इसलिए **ख़बरदार! ऐसे अफ़राद को अपने ख़ास लोगों में शामिल न करना कि ये ज़ालिमों के मददगार और विश्वासघाती लोगों के भाई और साथी हैं और तुम्हें उनके बदले बहुत अच्छे लोग मिल सकते हैं जिनके पास उन्हीं की जैसी अक़्ल और कार्यक्षमता हो और उनके जैसे गुनाहों के बोझ और जुर्म के अंबार न हों।** न उन्होंने किसी ज़ालिम की उसके जुल्म में मदद की हो और न किसी गुनाहगार का उस के गुनाह में साथ दिया हो। ये वो लोग हैं जिनका बोझ तुम्हारे लिए हल्का होगा और ये तुम्हारे बेहतरीन मददगार होंगे और तुम्हारी तरफ मोहब्बत का झुकाओ भी रखते होंगे और दुश्मनों से लगाव व मोहब्बत भी न रखते होंगे। इन्ही को अपने ख़ास प्रोग्रामों में अपना साथी

क़रार देना और फिर उनमें भी सबसे ज़्यादा हैसियत उसे देना **जो हक़ की तल्ख़ बात को कहने की ज़्यादा हिम्मत रखता हो और तुम्हारे किसी ऐसे अमल में तुम्हारा साथ न दे जिसे अल्लाह अपने नेक बन्दों के लिए पसंद न करता हो** चाहे वो तुम्हारी ख़्वाहिशात से कितनी ज़्यादा मेल क्यों न खाती हों।

समाज में व्यक्तियों कि पहचानः

अपना क़रीबी संपर्क गुनाहों से दूर रहने वाले और सच्चों से रखना और उन्हें भी इस बात की सलाह देना कि बग़ैर वजह तुम्हारी तारीफ न करें और किसी ऐसे बे—बुनियाद काम का घमंड न पैदा करें जो तुमने अंजाम न दिया हो कि **ज़्यादा तारीफ से घमंड पैदा होता है और घमंड व ग़ुरुर इन्सान को सरकश बना देता है।**

देखो ख़बरदार! अच्छा चरित्र रखने वाले और बुरे चरित्र वाले तुम्हारे नज़दीक एक न होने

पांए कि इस तरह नेक किरदार (अच्छे चरित्र) में नेकी से दूरी पैदा होगी और बुरे चरित्र में ग़लत काम का हौसला पैदा होगा। **हर शख़्स के साथ वैसा ही व्यवहार करना जिसके क़ाबिल उसने अपने को बनाया है** और याद रखना कि हुकूमत में जनता से अच्छे व्यवहार की इतनी उम्मीद करना चाहिए जितना उनके साथ एहसान किया है और उनके बोझ को हल्का बनाया है और **उनको किसी ऐसे काम पर मजबूर नहीं किया है जो उनके बस में न हो।** इसलिए तुम्हारा बर्ताव इस में ऐसा ही होना चाहिए जिससे तुम जनता से ज़्यादा से ज़्यादा भलाई पैदा कर सको कि ये शुभकामनाएँ बहुत सी अंदरूनी परेशानियों को ख़त्म कर देती हैं और **तुम्हारी भलाई का भी सबसे ज़्यादा हक़दार वो है जिसके साथ तुमने बेहतरीन सुलूक किया है। और सबसे ज़्यादा ग़लत सोच का हक़दार वो है जिसका बरर्ताव तुम्हारे साथ ख़राब रहा है।**

देखो किसी ऐसी नेक सुन्नत को मत तोड़ देना जिस पर इस उम्मत के बुज़ुर्गों ने अमल किया है और इसी के द्धारा समाज में मोहब्बत क़ायम होती है और जनता के हालात सुधरते हैं और किसी ऐसी सुन्नत को लागू न कर देना जो पिछली सुन्नतों के हक़ में हानिकारक हो कि इस तरह इनाम उस के लिए होगा जिसने सुन्नत को ईजाद किया है और गुनाह तुम्हारी गर्दन पर होगा कि तुमने उसे तोड़ दिया है।

उलेमा के साथ इल्मी चर्चा और विद्धानों के साथ गंभीर चर्चा जारी रखना उन कार्य के बारे में जिनसे इलाक़े के काम का सुधार होता है और वो काम बाक़ी रहते हैं जिनसे गुज़रे लागों के हालात मे सुधार हुआ हो।

और याद रखो कि जनता के बहुत से वर्ग होते हैं जिनमें किसी एक का सुधार दूसरे के बग़ैर नहीं हो सकता है और कोई दूसरे पर आत्मनिर्भर नहीं हो सकता है। उन्ही में अल्लाह के लश्कर के सिपाही हैं और उन्ही

में आम और ख़ास काम करने वाले हैं। उन्हीं में अदालत से फैसला करने वाले हैं और उन्हीं में इन्साफ और नरमी क़ायम करने वाले लोग हैं। उन्हीं में टैक्स देने वाले मुस्लमान और काफिर हैं और उन्हीं में व्यापार और उद्योग–धन्धे वाले लोग भी हैं और फिर उन्हीं में ग़रीब लाचार का निम्न वर्ग भी शामिल है और सब के लिए परवरदिगार ने एक हिस्सा निर्धारित कर दिया है और अपनी किताब के कर्तव्यों या अपने नबी की सुन्नत में इस की हदें क़ायम कर दी हैं और ये वो वचन है जो हमारे पास महफूज़ है।

फौजी दस्ते:

ये हुक्मे ख़ुदा से समाज के रक्षक और शासक की ज़ीनत हैं। इन्ही से दीन की इज़्ज़त है और **यही अमन व शांति के माध्यम हैं समाज के कार्य उनके बगैर नहीं हो सकते हैं** और ये सैन्य बल भी क़ायम नहीं रह सकते हैं जब तक वो टैक्स न निकाल दिया

जाये जिसके ज़रिए दुश्मन से जंग की ताक़त मिलती है और जिस पर हालात के सुधार में भरोसा किया जाता है और यही उनकी स्थिति मे सुधार करने का माध्यम है।

न्यायाधीशों,वित्तीय प्रभारी और कार्यकारी अधिकारी का चयनः

इसके बाद इन वर्गो का चयन न्यायाधीशों, वित्तीय प्रभारी और कार्यकारी अधिकारी के वर्गो के बगैर नहीं हो सकती है कि ये सब अहदो पैमान को मज़बूत बनाते हैं। मुनाफे को जमा करते हैं और मामूली और ग़ैरमामूली कामों में इन पर भरोसा किया जाता है।

व्यापारी और उद्योगपतिः

इस के बाद इन सब का चयन व्यापारी और उद्योगपतियों के बग़ैर सम्भव नहीं है कि **वह जीवन के संसाधनों को लगाते हैं। बाज़ारों को स्थापित करते हैं** और लोगों की ज़रूरत का सामान उनकी ज़हमत के

बगैर प्रदान कर देते हैं।

गरीब और गरीबों की निम्न श्रेणीः

इस के बाद ग़रीब और ग़रीबों की निम्न श्रेणी है जो सहायता के हक़दार हैं और **अल्लाह के यहां सभी के लिए ज़िन्दगी जीने का अधिकार है** और हर एक का शासक पर इतनी मात्रा में हक़ है जिससे उस के मामले का निपटारा हो सके और शासक इस कर्तव्य से बच नहीं सकता है जब तक इन कार्यों की व्यवस्था न करे और अल्लाह से मदद तलब न करे और अपने आप को अधिकारों के अदा करने और इस रास्ते के थोड़े कठिन पर सब्र करने के लिए तैय्यार न करे इसलिए **फ़ौज का सरदार उसे क़रार देना जो अल्लाह, रसूल और इमाम का सबसे ज़्यादा ईमानदार सबसे ज़्यादा पवित्र और सबसे ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला हो। गुस्से के मौके पर जल्दबाजी न करता हो।** वजह को कुबूल कर लेता हो। कमज़ोरों पर मेहरबानी

करता हो। ताक़तवर अफराद के सामने अकड़ जाता हो। गाली उसे जोश में न ले आए और कमज़ोरी उसे बिठा न दे ।

जनसंपर्क :

फिर उस के बाद **अपना संपर्क उच्च परिवार, नेक घराने अच्छी परंपराओं वाले और हिम्मती व ताक़तवर उदार कर्म करने वालों से मज़बूत रखो** कि ये लोग कर्म की पूंजी और नेकियों का स्रोत हैं। उनके हालात की इसी तरह देख–भाल रखना जिस तरह माँ बाप अपनी औलाद के हालात पर नज़र रखते हैं और अगर उनके साथ कोई ऐसा व्यवहार करना जो उन्हें ताक़त देता हो तो उसे महान न ख़्याल कर लेना और **अगर कोई मामूली बरर्ताव भी किया है तो उसे मामूली समझ कर रोक न देना।** इसलिए कि अच्छा व्यवहार उन्हें सच्चाई की दावत देगा और उन में नेकी पैदा कराएगा और देखो **बड़े बड़े कामों पर ऐतबार**

करके छोटी छोटी ज़रूरियात की निगरानी को नज़र अंदाज न कर देना कि मामूली मेहरबानी का भी एक असर है जिससे लोगों को फ़ायदा होता है और बड़े कर्म का भी एक स्थान है जिससे लोग आत्मनिर्भर नहीं हो सकते हैं।

व्यक्तियों की पहचानः

और देखो तमाम लश्करों के सरदार में **तुम्हारे नज़दीक सबसे ज़्यादा सुप्रीम उसे होना चाहिए जो फौजियों की मदद में हाथ बटाता हो और अपनी अतिरिक्त संपत्ति से उन पर इस तरह कर्म करता हो कि उनके रिश्तेदार और आश्रितों के लिए भी काफी हो जाये** ताकि सब का एक ही मकसद रह जाये और वो है दुश्मन से जंग। इसलिए कि उनसे **तुम्हारी मेहरबानी उनके दिलों को तुम्हारी तरफ मोड़ देगी।** और शासक के हक़ में बेहतरीन आंखों की ठंडक का सामान है कि पूरे देश में अदल व इन्साफ स्थापित हो

जाये और **समाज में प्यार व मोहब्बत ज़ाहिर हो जाये और यह काम उस वक़्त तक सम्भव नहीं है जब तक दिल सलामत न हों** और इच्छाएं पूरी नहीं हो सकती हैं जब तक अपने शासकों के चारो तरफ घेरा डाल कर उनकी सुरक्षा न करें और फिर उनकी सत्ता को सिर का बोझ न समझें और उनकी हुकूमत के अंत का इंतिजार न करें इसलिए उनकी उम्मीदों में विस्तार देना और बराबर कारनामों की तारीफ़ करते रहना बल्कि **महान लोगों के कारनामों को याद करते रहना कि ऐसे कारनामों का ज़्यादा होना बहादुरों को जोश दिलाता है** और पीछे हट जाने वालों को पलटा दिया करता है। इंशाअल्लाह ।

इस के बाद हर व्यक्ति के कारनामें को पहचानते रहना और किसी के कारनामें को दूसरे के नाम से न लिख देना और उन का पूरा बदला देने में कोताही न करना और किसी शख़्स की समाजी हैसियत तुम्हें इस बात पर आमादा न कर दे कि तुम उस के मामूली काम

को बड़ा बना दो या किसी छोटे आदमी के बड़े कारनामें को मामूली बना दो।

जो कार्य मुश्किल दिखाई दें और तुम्हारे लिए संदिग्ध हो जाएं। उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ पल्टा दो। कि परवरदिगार ने जिस क़ौम को हिदायत देना चाही है उस से फरमाया है कि ईमान वालो! **अल्लाह रसूल और साहिबाने अम्र की अज्ञा का पालन करो।** इस के बाद किसी चीज़ में तुम्हारा विरोध हो जाये तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ पल्टा दो तो अल्लाह की तरफ पल्टाने का मतलब उस की किताब कुरान की तरफ पलटाना है।

अदालतः

लोगों के बीच फैसला करने के लिए उन लोगों का चुनाव करना जो जनता में तुम्हारे नज़दीक सबसे ज़्यादा बेहतर हों। इस ऐतबार से कि मुद्दों पर तंगी का शिकार न होते हों और न झगड़ा

करने वालों पर ग़ुस्सा करते हों । न ग़लती पर अड़ जाते हों और हक़ के सामने आ जाने के बाद उस की तरफ पलट कर आने में संकोच न करते हों और उनका मन लालच की तरफ न झुकता हो और मामलों की तहक़ीक़ में छोटी अक़्ल पर भरोसा करके तहक़ीक़ पूरी करते हों। शक में ठहरने वाले हों और दलीलों को सबसे ज़्यादा मानने वाले हों। विपक्ष की बहस से उकता न जाते हों और मामलों की छानबीन में बर्दाश्त की ताक़त का प्रदर्शन करते हों और **फैसले के साफ हो जाने के बाद बहुत ही स्पष्ट निर्णय कर देते हों।** न किसी की तारीफ से घमंडी होते हों और न किसी के उभारने पर ऊंचे हो जाते हों। ऐसे लोग यक़ीनन कम हैं। लेकिन हैं।

फिर इस के बाद **तुम ख़ुद भी उनके फैसलों की निगरानी करते रहना** और उनको मिलने वाला अनुदान इतना अधिक देना कि उनकी ज़रूरत ख़त्म हो जाये और फिर लोगों के मोहताज न रह जाएं उन्हें अपने

पास ऐसी इज़्ज़त और जगह देना जिसकी तुम्हारे ख़ास भी लालच न करते हों कि इस तरह वो लोगों के नुक़सान पहुंचाने से महफ़ूज़ हो जाएंगे। **मगर इस मामले पर भी गहरी निगाह रखना कि ये दीन बहुत दिनों तक बूरे लोगों के हाथों में क़ैदी रह चुका है** जहां ख़्वाहिशात की बुनियाद पर काम होता था और मक़सद सिर्फ दुनिया हासिल करना था।

कार्यकारी अधिकारी:

उस के बाद **अपने अधिकारियों के कामों पर भी निगाह रखना** और उन्हें जांचने के बाद काम सौंपना और खबरदार ताल्लुक़ात या पक्षपात के आधार पर ओहदा न दे देना कि ये बातें जुल्म और विश्वासघात के प्रभाव में शामिल हैं। और देखो **उन में भी जो ईमानदार और गैरतमंद हों उनको तलाश करना जो अच्छे घराने के लोग हों** और उनकी पूर्व में समाज के लिए सेवाएं रह चुकी हों कि ऐसे लोग अच्छे

चरित्र और साफ सुथरी छवि वाले होते हैं। इनके अंदर फ़ुजूलखर्ची की लालच कम होती है और ये परिणाम पर ज़्यादा नज़र रखते हैं। इस के बाद **उन के भी सभी ख़र्चों का इंतिजाम कर देना कि इससे उन्हें अपने आप को सुधारने का भी मौक़ा मिलता है** और दूसरों के माल पर क़ब्जा करने से भी दूर हो जाते हैं, और फिर तुम्हारे काम का विरोध करें या अमानत में रुकावट पैदा करें तो उनका तर्क भी ख़त्म हो जाती है।

इसके बाद इन **अधिकारियों के काम की भी तफतीश करते रहना और बहुत ही विश्वसनी सच्चे और ईमानदार व्यक्तियों को उन पर जासूसी के लिए नियुक्त कर देना** कि ये व्यवहार उन्हें अमानतदारी के साथ काम करने पर और जनता के साथ नरमी के बर्ताव पर तैय्यार करेगा। और देखो अपने मददगारों से भी अपने को बचा कर रखना कि अगर उनमें कोई एक भी बेईमानी की तरफ हाथ बढ़ाए और तुम्हारे जासूस सर्वसम्मति से ये खबर दें तो इस संदेह को काफी समझ

लेना और उसे शरीरिक रूप से भी सजा देना और जो माल हासिल किया है उसे छीन भी लेना और समाज में अपमानित करके गद्दारी के मुजरिम की हैसियत से पहचनवाना और बेईमानी व बेइज़्ज़ती की माला उस के गले में डाल देना।

राजस्व का प्रशासन :

राजस्व टैक्स (भूमि कर) एवं संपत्ति निवेश करने वालों के लिए वह तरीक़ा लागू करना जो निवेशकों के हक़ में ज़्यादा बेहतर हो कि **राजस्व और टैक्स देने वालों की ख़ुशहाली ही में सारे समाज की ख़ुशहाली है** और किसी के हालात में सुधार राजस्व की समृद्धि के बगैर नहीं हो सकता है लोग सब के सब उसी टैक्स के भरोसे जिंदगी गुज़ारते हैं। **राजस्व में तुम्हारी नज़र माल जमा करने से ज़्यादा ज़मीन के पुनर्वास पर होनी चाहिए** कि माल का जमा होना ज़मीन के पुनर्वास के बग़ैर सम्भव नहीं है और जिसने पुनर्वास के

बग़ैर लगान की मांग किया उसने शहरों को बर्बाद कर दिया और निवासियों को तबाह कर दिया और उस की हुकूमत कुछ दिनों से अधिक बाक़ी नहीं रह सकती है। इस के बाद अगर लोग अधिभार, आकस्मिक आपदा, नहरों का सूखा, बारिश की कमी, खे़तों का डूबना के कारण तबाही और सूखे की वजह से बर्बादी की कोई फ़र्याद करें तो उनके राजस्व में इतनी छूट देना कि उनके कार्यों में सुधार हो सके और **ख़बरदार छूट तुम्हारे दिल पर भरी न** हो इसलिए कि ये छूट और सुविधा एक संग्रह है जिसका असर शहरों की आबादी और गवर्नरों की शान व शौकत की शक्ल में तुम्हारी ही तरफ वापिस आएगा और इस के अलावा तुम्हें बहुत तारीफ भी मिलेगी और **न्याय व इन्साफ के फैल जाने से ख़ुशी भी हासिल होगी फिर उनके आराम व कल्याण और न्याय व इन्साफ, आराम व सुविधा की वजह से जो भरोसा हासिल किया है इससे एक अतिरिक्त ताक़त भी हासिल होगी जो ज़रूरत के**

वक़्त काम आ सकती है। इसलिए कि कई बार ऐसे हालात सामने आ जाते हैं कि जिनमें भरोसा और अच्छे विचार के बाद उन पर भरोसा करो तो बहुत ख़ुशी से मुसीबत को सहन कर लेते हैं और इस का कारण ज़मीनों का पुर्नवास ही होता है। **ज़मीनों की बर्बादी ज़मीन वालों की ग़रीबी से पैदा होती है** और ग़रीबी का कारण शासकों का दिल माल जमा करने की तरफ आकर्षित होना है और उनको ये बदजनी होती है कि हुकूमत बाकी रहने वाली नहीं है और वह दूसरे लोगों के हालात से सीख हासिल नहीं करते हैं।

क्लर्क के प्रशासनिक कार्य :

उस के बाद अपने मुंशियों के हालात पर नज़र रखना और **अपने कार्य को निपुर्ण लोगों के हवाले करना** और फिर वह पत्र जिसमें हुकुमत की पॉलिसी और राज्य के राज़ हों इन लोगों के हवाले करना जो अच्छे व्यवहार व अच्छे चरित्र के मालिक हों और इज़्ज़त

पाकर अकड़ न जाते हों कि एक दिन लोगों के सामने तुम्हारी मुख़ालेफत की हिम्मत पैदा कर लें और लापरवाही के कारण लेन–देन के कामों में तुम्हारे अधिकारियों के पत्रों के पेश करने और उनके उत्तर देने में आलस से काम लेने लगें और तुम्हारे लिए जो वादे और वचन दिए हों उसे कमज़ोर कर दें और तुम्हारे ख़िलाफ होने वाले षड़यंत्र को तोड़ने में असमर्थता दिखाने लगें। देखो ये लोग काम में अपने पद की भूमिका से अंजान न हों कि **अपने अधिकार व शक्ति का न पहचानने वाला दूसरे के स्थान व अधिकार से निश्चित रूप से परिचित नही होगा।**

इसके बाद उन की नियुक्ति भी केवल उनकी अपनी होशियारी, भरोसे और उनको अच्छा समझ कर न करना इसलिए कि **कुछ लोग अधिकारियों के सामने बनावटी छवि और दिखावे के काम करके अपने को अच्छा बना कर पेश करने की कला रखते हैं** जब कि इसके पीछे न कोई वफादारी व सच्चाई होती है और

न ईमानदारी पहले उनका इम्तिहान लेना कि तुमसे पहले वाले नेक किरदार शासकों के साथ उनका बरर्ताव क्या रहा है फिर जो जनता में अच्छा प्रभाव रखते हों और अमानतदारी की बुनियाद पर पहचाने जाते हों उन्हीं की नियुक्ति कर देना कि ये इस बात की दलील होगी कि तुम अपने अल्लाह के सच्चे बन्दे और अपने इमाम के वफादार हो। **अपने सभी विभागों के लिए एक एक अफ्सर नियुक्त कर देना जो बड़े से बड़े काम से पीछे न हटे** और काम के ज़्यादा हो जाने पर परेशान न हो जाता हो। और ये याद रखना कि इन क्लर्को में जो भी बुराई होगी और तुम उस पर ध्यान नही दोगे उस का जवाब तुम को ही देना होगा।

व्यापारी और उद्योगपतिः

इस के बाद व्यापारियों और उद्योंगपतियों के बारे में नसीहत हासिल करो और दूसरों को उनके साथ नेक व्यवहार की नसीहत करो चाहे वो एक स्थान पर काम

करने वाले हों या कई जगहों पर करने वाले हों और शरीरिक मेहनत से रोज़ी कमाने वाले हों। इसलिए कि इन्हीं लोगों के द्धारा फाएदा होता है और ज़िन्दगी की ज़रूरत की चीज़ें उपलब्ध कराने का माध्यम होते हैं। यही लोग दूर दूर समुन्द्र और ज़मीनी रास्ते से हर जगह से उन ज़रूरत की चीज़ों को उपलब्ध करने वाले होते हैं जहां लोगों की पहुँज नहीं होती है और जहां तक जाने की लोग हिम्मत नहीं करते हैं। **ये वो शांति पसंद लोग हैं जिनसे फ़साद का ख़तरा नहीं होता है** और वह मेलजोल व भाई–चारे वाले होते हैं जिनसे किसी लड़ाई झगड़े का ख़तरा नहीं होता है।

अपने सामने और दूसरे शहरों में फैले हुए उनके कामों की निगरानी करते रहना और ये ख़्याल रखना कि उनमें बहुत से लोगों में छोटी सोच और बहुत ज़्यादा की कंजूसी पाई जाती है। **ये फाएदे की ज़रूरी चीज़ों को जमा कर लेते हैं और ऊंचे ऊंचे दाम ख़ुद ही तैय कर देते हैं।** जिससे जनता

को नुक़सान होता है और हुकुमत की बदनामी होती है। लोगों को माल जमा करने से मना करो कि रसूल अकरम[स0] ने इससे मना फरमाया है। **ख़रीदने और बेचने में आसानी ज़रूरी है** जहां इंसाफ से काम लिया जाए और वो रास्ता अपनाया जाए जिससे ख़रीदने वाले और बेचने वाले किसी व्यक्ति का हक़ न मारा जाए। इस के बाद तुम्हारे मना करने के बाद **अगर कोई व्यक्ति अवैध रूप से माल जमा करे तो उसे सज़ा दो** लेकिन इस में भी नाइंसाफी न होने पाए।

पिछड़ा वर्गः

इस के बाद **अल्लाह से डरो उस पिछड़े वर्ग के बारे में जो ग़रीब मोहताज कमज़ोर और लाचार लोगों का वर्ग है** जिनका कोई सहारा नहीं है। इस वर्ग में मांगने वाले भी हैं और ग़ैरत रखने वाले भी हैं जिनका चेहरा ही उनका सवाल है। **उनके जिस हक का**

अल्लाह ने तुम्हें रक्षक बनाया है उस की हिफाजत करो और उनके लिए सरकारी ख़ज़ाने में से एक हिस्सा तैय कर दो कि उनके दूर वालों का भी वही हक है जो करीब वालों का है और तुम्हें सबका संरक्षक बनाया गया है इसलिए देखो कहीं घमंड व गुरूर तुम्हें उनकी तरफ से लापरवाह न बनादे कि तुम्हें बड़े कामों के मज़बूत कर देने से छोटे कामों की बर्बादी से माफ न किया जाएगा। इसलिए अपना ध्यान उनकी तरफ से न हटाना और न घमंड़ की वजह से उनसे अपना मुँह मोड़ लेना। जिन लोगों की पहुँच तुम तक नहीं है और लोग उनको कुछ नही समझते और उनके हालात की देख–भाल भी तुम्हारी ही ज़िम्मेदारी है इसलिए उनके लिए अच्छे लोगों और **अल्लाह से डरने वाले भरोसेमदं लोगों को नियुक्त करो** जो तुम तक उनकी कमियों को पहुंचाते रहें और तुम ऐसे काम करते रहो जिसकी वजह से क़यामत के दिन अल्लाह के सामने बच सको इसलिए कि **इन्ही लोगों कों सबसे ज़्यादा**

इन्साफ की ज़रूरत है और फिर हर एक के हक़ को अदा करने में अल्लाह के सामने अपने को सही साबित कर सको।

अनाथ और वृद्धों की ज़िम्मेदारी:

अनाथ और वृद्धों के हालात की भी निगरानी करते रहना कि उनका कोई ज़रिया नहीं है और **ये सवाल करने के लिए खड़े भी नहीं होते हैं** ज़ाहिर है कि उनका ख़्याल रखना हुकुमत के लिए बड़ा संगीन मसला होता है लेकिन क्या किया जाये हक़ तो सब पर कठिन ही है। फिर भी कभी कभी अल्लाह उसे कुछ सुकून दे देता है इन लागों के लिए जो क़्यामत की तमन्ना करते हैं और **इस रास्ते में अपने दिल को बर्दाश्त का आदी बना लेते हैं** और अल्लाह के वादे पर भरोस ज़ाहिर करते हैं।

जनता दरबारः

और देखो ज़रूरतमंदों के लिए एक समय निश्चित करलो जिसमें अपने को उन के लिए ख़ाली करलो और **एक जनता दरबार में बैठो**। अल्लाह के सामने अकड़ो नही जिसने पैदा किया है और **अपने सभी सुरक्षाकर्मी पुलिस, फ़ौज और साथियों सबको दूर बिठा दो ताकि बोलने वाला आज़ादी से बोल सके और अपनी पूरी बात कह सके,** मैंने रसूल हज़रत मोहम्द[स0] से ख़ुद सुना है कि आपने बार–बार फरमाया है कि वो उम्मत पाकीज़ा किरदार नहीं हो सकती है जिसमें कमज़ोर को आज़ादी के साथ ताक़तवर से अपना हक़ लेने का मौक़ा न दिया जाये ।

इस के बाद उनकी तरफ से बुरा व्यवहार हो तो उसे बर्दाश्त करो और **दिल पर असर लेने से अपने को दूर रखो** कि जिससे अल्लाह तुम्हारे लिए रहमत के रास्ते खोल दें और अज्ञा के इनाम को ज़रूरी करार दो जिसे जो कुछ दो अच्छे तरीक़े से दो और जिसे मना

करो उसे ख़ूबसूरती के साथ टाल दो।

शासक के कार्यः

इस के बाद तुम्हारे कामों में कुछ ऐसे काम भी हैं जिन्हें तुम्हें ख़ुद ही करना है। जैसे अफसरों की समस्याओं के जवाबात जिनके जवाबात दूसरे लोग न दे सकें या लोगों के इन ज़रूरियात को पूरा करना जिनके पूरा करने से तुम्हारे मददगार लोग आलस करते हों और देखो **हर काम को इसी के दिन पूरा कर देना** कि हर दिन का अपना एक काम होता है। इस के बाद **अपने और अल्लाह के सम्पर्क के लिए बेहतरीन समय का चयन करना** जो सबसे अच्छा समय हो। जबकी हर समय अल्लाह के लिए हो सकता है अगर इन्सान की नियत सही रहे और जनता उस के द्वारा खुशहाल हो जाये और तुम्हारे वो काम जिन्हें सिर्फ अल्लाह के लिए करते हो उनमें से सबसे मुख्य काम उन ज़िम्मेदारियों का पूरा करना हो जो सिर्फ अल्लाह के

लिए होते हैं। अपनी शरीरिक ताक़त में से रात और दिन दोनों समय एक हिस्सा अल्लाह के लिए रख देना और **जिस काम के द्धारा अल्लाह से नज़दीक होना चाहते हो उसे पूरी तरह से अंजाम देना** न कोई रूकावट पड़ने पाए न कोई कमी पैदा हो जाये शरीर को कितनी ही परेशानी क्यों न हो जाये। और जब लोगों के साथ जमात की नमाज़ पढ़ाओ तो न इस तरह पढ़ो कि लोग बेज़ार हो जाएं और न इस तरह कि नमाज़ बर्बाद हो जाये इसलिए कि **लोगों में बीमार और ज़रूरतमंद लोग भी होते हैं** और मैंने यमन के अभियान पर जाते हुए हुजूर अकरम[स0] से पूछा था कि नमाज़ जमात का अंदाजा क्या होना चाहिए तो आपने फरमाया था कि सबसे कमज़ोर आदमी के ऐतबार से नमाज़ अदा करना और मोमेनीन के हाल पर मेहरबान रहना।

इस के बाद ये भी ख़्याल रहे कि **अपनी जनता से देर तक अलग न रहना** कि शासक का जनता के सामने नही रहना एक तरह की निराशा पैदा करता है

और उनकी समस्याओं की जानकारी नहीं हो पाती है और ये राज़दारी उन्हें भी इन चीज़ों के जानने से रोक देती है जिनके सामने ये पर्दा आ जाए और इस तरह बड़ी चीज़ छोटी हो जाती है और छोटी चीज़ बड़ी हो जाती है। अच्छा बुरा बन जाता है और बुरा अच्छा हो जाता है

और हक़ बातिल से मिल जाता है। और **शासक भी आख़िर एक इन्सान है वह सामने न आने वाले कार्य की सूचना नहीं रखता है** और न हक़ की मुश्किल पर ऐसे चिन्ह होते हैं जिनके द्धारा सच्चाई के प्रकार को ग़लतबयानी से अलग करके पहचाना जा सके।

और फिर तुम दो में से एक प्रकार के ज़रूर होगे। या वह व्यक्ति होंगे जिसका दिल सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले है तो फिर **तुम्हें जाएज़ हक़ देने की राह में पर्दा डालने की क्या ज़रूरत है।** और अच्छी छवि वाले लोगों की तरह कार्य क्यों नहीं करते हो। या

तुम कंजूसी की बीमारी में पड़े होगे तो बहुत जल्दी लोग तुमसे मायूस हो कर ख़ुद ही अपने हाथ खींच लेंगे और तुम्हें पर्दा डालने की ज़रूरत ही न पड़ेगी। जबकी लोगों की अधिकतर ज़रूरतें वो हैं जिनमें तुम्हें किसी तरह की परेशानी नहीं है जैसे अत्याचार की शिकायत या किसी कार्य में इन्साफ की मांग।

विशेष और राज़ रखने वाले लोगः

इस के बाद ये भी ख़्याल रहे कि **हर शासक के कुछ विशेष और राज़ रखने वाले लोग होते हैं** जिनमें निजी स्वार्थ, झगड़े और कार्यो में नाईंसाफी पाई जाती है इसलिए देखो ऐसे लोगों के झगड़ों का ईलाज इन कारणों के ख़त्म करने से करना जिनसे ये स्थिति पैदा हुई है। **अपने किसी भी जानने वाले या रिश्तेदार को कोई सम्पत्ति न दे देना** और उसे तुमसे कोई ऐसी इच्छा न होनी चाहिए कि तुम किसी ऐसी ज़मीन पर कब्ज़ा देदोगे जिसके कारण धन की

बारिश या किसी साझे के कार्य में साझा करने वाले लोगों को नुक़सान पहुंच जाय कि अपने ख़र्चे भी दूसरे के सर डाल दे और इस तरह इस काम का मज़ा उस के हिस्सा में आए और इस की ज़िम्मेदारी दुनिया और क़यामत में तुम्हारे ज़िम्मे रहे।

और जिस पर कोई हक़ बनता हो उस पर इस के लागू करने की ज़िम्मेदारी डालो चाहे वो तुमसे नज़दीक हो या दूर और इस कार्य में **अल्लाह के रास्ते में धैर्य से काम लेना** चाहे उस का असर तुमहारे ख़ास लोगों ही पर क्यों ना पड़ता हो और इस सम्बन्ध में तुम्हारे स्वभाव पर जो भारी हो उसे क़यामत की उम्मीद में बर्दाश्त कर लेना कि इस का अन्त बेहतर होगा।

जनता के बीच छविः

और **अगर कभी जनता को ये ख़्याल हो जाये कि तुमने उन पर जुल्म किया है तो उन के लिए अपनी स्थिति साफ करो** और इस तरह से

उनकी ग़लत सोच का ईलाज करो कि इस में तुम्हारे स्वभाव की ट्रेनिंग भी है और समाज पर नरमी का इज़हार भी है और वह बहाना भी है जिसके द्धारा तुम जनता को सीधे रास्ते पर चलाने का मकसद भी हासिल कर सकते हो।

दुश्मन से समझौताः

और देखो किसी ऐसी शांति की दावत का इन्कार न करना जिसकी पहल दुश्मन की तरफ से हो और जिसमें अल्लाह की रज़ामंदी पाई जाती हो कि **समझौते के द्धारा फ़ौजों को कुछ अराम मिल जाता है** और तुम्हारे मन को भी विचारों से नजात मिल जाएगी और शहरों में भी अमन व शांति का वातावरण स्थापित हो जाएगी। **लेकिन सुलह के बाद दुश्मन की तरफ से पूरी तरह से होशियार रहना** कि कभी कभी वो तुम्हें लापरवाह बनाने के लिए तुमसे नज़दीक होना चाहता है इसलिए इस कार्य में पूरी होशियारी से काम

लेना और किसी अच्छे विचार से काम न लेना और अगर अपने और उस के बीच कोई समझौता करना या उसे **किसी तरह का वचन देना तो अपने वचन को पूरी वफ़ादारी के साथ निभाना** और अपनी ज़िम्मेदारी को ईमानदारी के द्धारा सुरक्षित बनाना और अपने वचन को पूरा करने की राह में अपनी इच्छा को ढाल बना देना कि अल्लाह की ज़िम्मेदारियों में वचन को पूरा करने जैसा कोई कर्तव्य नही है जिस पर **सभी लोग इच्छाओं के अन्तर और विचारधारा के टकराव के बाद भी एक हैं** और इस का दुश्मन ने भी अपने कार्य में ख़्याल रखा है कि वचन तोड़ देने के कारण तबाहियों को बुला लिया है। तो देखो **तुम अपने वचन से गद्दारी न करना और अपनी ज़बान और कार्य में विश्वासघात से काम न लेना और अपने दुश्मन पर अचानक हमला न कर देना।** इसलिए कि अल्लाह के मुक़ाबला में जाहिल व अभागी के अलावा कोई हिम्मत नहीं करता है और **अल्लाह ने वचन को अमन व भाांति का**

स्रोत बताया है जिसे अपनी दया से सभी बंदों के बीच आम कर दिया है और ऐसा आश्रय बना दिया है जिसके नीचे आकर पनाह लेने वाले पनाह लेते हैं और उसके पास में ठहरने के लिए तेज़ी से क़दम आगे बढ़ाते हैं इसलिए इस में कोई जालसाजी धोका और मक्कारी न होनी चाहिए और कोई **ऐसा अनुबन्ध न करना जिसमें बहाने की ज़रूरत पड़े** और अनुबन्ध के पूरा हो जाने के बाद उस के किसी शब्द से फायदा उठाने की कोशिश न करना और अल्लाह के यहां तंगी का एहसास बातिल के साथ सम्बन्ध बढ़ाने पर तैय्यार न करदे कि किसी कार्य की कमी पर सब्र कर लेना और अच्छे समय और बेहतरीन रिज़ल्ट का इंतिजार करना इस गद्दारी से बेहतर है जिसका प्रभाव ख़तरनाक हो और तुम्हें अल्लाह की तरफ से जवाबदेही की मुसीबत घेर ले और दुनिया व आख़ेरत दोनों तबाह हो जाएं।

देखो खबरदार। अन्याय के साथ **ख़ून बहाने से बचो** कि इससे ज़्यादा अल्लाह के प्रकोप से नज़दीक

हो जाओगे और इसके असर से कठिन परिस्थिति और नेअमतों के छिन्न, ज़िन्दगी के ख़त्म होने के लिए इससे अधिक कोई वजह नहीं है और अल्लाह क़यामत के दिन अपने फैसले की शुरूआत ख़ून ख़राबे के मामलों से करेगा। इसलिए देखो **अपनी हुकूमत की स्थिरता मज़लूमों के खूँन ख़राबे के द्वारा न पैदा करना** कि ये बात हुकूमत को कमज़ोर और बे—जान बना देती है बल्कि तबाह करके दूसरों की तरफ मुंतकलि स्थानांतरित कर देती है और तुम्हारे पास न ख़ुदा के सामने और न मेरे सामने जानबूझ कर क़त्ल करने का कोई बहाना नहीं है और इस में जिंदगी का बदला भी साबित है। फिर भी अगर धोके से इस ग़लती में शामिल हो जाओ और तुम्हारा कोड़ा तलवार या हाथ सज़ा देने में अपनी हद से आगे बढ़ जाये कि कभी कभी घूंसा आदि भी क़त्ल की वजह बन जाता है। तो ख़बरदार **तुम्हें साम्राज्य का घमंड इतना ऊंचा न बनादे कि तुम ख़ून के वारिसों को उनका हक़ रक्त धन भी अदा ना करो**।

शासक के कर्तव्यः

और देखो **अपने मन को अहंकार से भी बचाकर रखना** और अपनी पसंद पर भरोसा भी न करना और ज़्यादा तारीफ़ का शौक़ भी न पैदा हो जाये कि ये सब बातें शैतान को छूट देने के बेहतरीन साधन हैं जिनके द्धारा वो नेक काम करने वाले के कार्य को ख़त्म और बर्बाद कर दिया करता है।

और देखो **जनता पर एहसान भी न जताना और जो व्यवहार किया है उसे ज़्यादा समझने की कोशिश भी न करना** या उनसे कोई वादा करके उस के बाद वादा ख़िलाफी भी न करना कि ये कार्य एहसान को बर्बाद कर देता है और **अधिक कार्य करने का घमंड हक़ की नूरानियत को मिटा देता है** और वादा ख़िलाफी अल्लाह और अल्लाह के बन्दों दोनों के लिए नाराज़गी का कारण होती है जैसा कि उसने इरशाद फरमाया है कि **अल्लाह के नज़दीक ये बड़ी नाराज़गी की बात है कि तुम कोई बात कहो और**

फिर उसके अनुसार अमल न करो।

और **ख़बरदार वक़्त से पहले कामों में जल्दी न करना और वक़्त आ जाने के बाद सुस्ती न दिखाना** और बात समझ में न आए तो झगड़ा न करना और साबित हो जाये तो कमज़ोरी न दिखाना। **हर बात को उस की जगह रखो हर कार्य उसके समय पर करो।**

देखो **जिस चीज़ में तमाम लोग बराबर के शमिल हैं उसे अपने नाम से न कर लेना** और जो हक़ निगाहों के सामने आ जाए उससे लापरवाही न करना कि दूसरों के लिए यही तुम्हारी ज़िम्मेदारी है और जल्द ही सभी कामों से पर्दा उठ जाएगा और **तुम से मज़लूम का बदला ले लिया जाएगा।** अपने गुस्से की तेज़ी अपने विद्रोह के जोश अपने हाथ की हरकत और अपनी ज़ुबान की काट पर क़ाबू रखना और उन सभी चीज़ों से अपने को इस तरह सुरक्षित रखना कि **जल्दबाजी से काम न लेना और सजा देने में**

जल्दी न करना यहां तक कि गुस्सा ठहर जाये और अपने ऊपर क़ाबू हासिल हो जाये। और इस कार्य पर भी नियंत्रण उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकता है जब तक अल्लाह की बारगाह में वापस जाने का ख़्याल ज़्यादा से ज़्यादा न हो जाए।

भविष्य से सीख :

तुम्हारा कर्तव्य है कि **भविष्य में गुज़र जाने वाली न्याय करने वाली हुकूमत और अच्छे कर्तव्यों को याद रखो** रसूल अकरम[स0] के आसार और किताब ख़ुदा के अहकाम को निगाह में रखो और जिस तरह हमें अमल करते देखा है इसी तरह हमारा अनुसरण करो और जो कुछ इस अह्दनामे में हमने बताया है इस पर अमल करने की कोशिश करो कि मैंने तुम्हारे ऊपर अपनी हुज्जत को मज़बूत कर दिया है ताकि जब तुम्हारा मन ख़्वाहिशात की तरफ तेज़ी से बढ़े तो तुम्हारे पास कोई बहाना न रहे। और मैं अपने पालनहार की फैली

हुई रहमत और हर मक़सद के अता करने की अज़ीम कुदरत के द्धारा ये सवाल करता हूँ कि मुझे और तुम्हें इन कामों की तौफीक़ दे जिसमे उस की मर्जी हो और हम दोनों उस की बारगाह में और बंदों के सामने वजह पेश करने के काबिल हो जाएं। बंदों की बेहतरीन तारीफ के हक़दार हों और क्षेत्र में बेहतरीन छाप छोड़ कर जाएं। **नेअमत की अधिकता और इज़्जत के बढ़ने को बाक़ी रख सकें** और हम दोनों का अंत सआदत और शहादत पर हो कि **हम सब अल्लाह के लिए हैं और इसी की बारगाह में पलट कर जाने वाले हैं।** सलाम हो रसूल–ए–खुदा[स0] पर और उनके पाक व पाकीज़ा परिवार पर और सब पर सलाम बे–हिसाब।

वस्सलाम

(नहजुलबलाग़ा पत्र स0 53)

64. *हुकूमत कैसे करें?*

The Caliph Ali Bin Abi Talib is considered the fairest governor who appeared during human history (After the Prophet Muhammad). So we advise Arab countries to take Imam Ali bin Abi Talib (AS) as an example in establishing a regime based on justice and democracy and encouraging knowledge.

إن خليفة المسلمين علي بن ابي طالب يعتبر اعدل حاكم ظهر في تاريخ البشر بعدل الرسول محمد لذلك تنصح . البلدان العربية الى الاقتداء به كمثال لتأسيس نظام قائم على العدالة والديمقراطية وتشجيع المعرفة.

KOFI ANNAN
SECRETARY-GENERAL OF THE UN

كوفي أنان
الأمين العام للأمم المتحدة

UNITED NATIONS

₹25/-

ISBN 938747907-2
9 789387 479074

IDARA-E-ISLAH
Masjid Diwan Nasir Ali, Murtaza Husain Road
Yahiyahganj, Lucknow - 226003, (U.P.) INDIA
www.islah.in, E-mail: islah_lucknow@yahoo.co.in